

भारत के मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की बदलती रूपरेखा

सामान्य अध्ययन – पेपर 2 : भारत और उसके पड़ोसी देश; भारत से जुड़े द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत के हितों को प्रभावित करने वाले समझौते ।

कीवर्ड : मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए), व्यापार समझौतों के प्रकार, भारत में मुक्त व्यापार समझौतों का इतिहास, द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौते ।

संदर्भ:

भारत और यूनाइटेड किंगडम 'भारत-यूके मुक्त व्यापार' समझौते के लिए बातचीत के अंतिम चरण में हैं। सरकारी स्रोतों के अनुसार भारत का लक्ष्य अक्टूबर 2022 तक इस समझौते पर हस्ताक्षर करना है।

व्यापार समझौतों के प्रकार

- **मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) :**
 - एक मुक्त व्यापार समझौते में दो या दो से अधिक भागीदार देश, सदस्य देशों को तरजीही व्यापार शर्तें, टैरिफ रियायतें आदि प्रदान करने के लिए सहमत होते हैं।
 - भारत ने कई देशों और व्यापार समूहों जैसे श्रीलंका, आसियान के साथ एफटीए पर चर्चा की है।
- **तरजीही व्यापार समझौता (पीटीए):**
 - जब दो या दो से अधिक भागीदार देश, कुछ उत्पादों में प्रवेश का अधिमान्य अधिकार देते हैं।
 - आपसी सहमति से चयनित उत्पादों पर टैरिफ शुल्क को कम किया जाता है।
 - कुछ उत्पादों के लिए शुल्क घटाकर शून्य भी किया जा सकता है।
 - भारत ने अफगानिस्तान के साथ एक पीटीए पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी):**
 - यह एक द्विपक्षीय समझौता है जहां दो देश, दोनों देशों के नागरिकों और फर्मों द्वारा निजी निवेश के लिए शर्तें तय करते हैं।
- **व्यापार और निवेश ढांचा समझौता (TIFA):**
 - यह दो या दो से अधिक देशों के बीच एक व्यापार समझौता है जो व्यापार के विस्तार और देशों के बीच विवादों का समाधान करने के लिए एक रूपरेखा स्थापित करता है।
- **व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए):**
 - यह समझौता एफटीए की तुलना में अधिक व्यापक है।
 - सीईपीए सेवाओं और निवेश के साथ ही आर्थिक साझेदारी के अन्य क्षेत्रों में व्यापार पर बातचीत को शामिल करता है।

- भारत ने संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण कोरिया और जापान के साथ सीईपीए पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (सीईसीए):**
 - सीईसीए आम तौर पर केवल व्यापार शुल्क और टीआरक्यू (टैरिफ दर कोटा) दरों पर बातचीत को कवर करता है।
 - यह सीईपीए जितना व्यापक नहीं है।
 - भारत ने मलेशिया के साथ सीईसीए पर हस्ताक्षर किए हैं।

मुक्त व्यापार समझौतों का विकास

- एक व्यापार नीति उपकरण के रूप में मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) नए युग की आवश्यकताओं के साथ तालमेल बनाने के लिए विकसित हो रहे हैं।
- पुराने समय में व्यापार समझौतों का मतलब केवल भागीदारों के बीच सीमा शुल्क रियायतों का आदान-प्रदान था।
- नए युग के एफटीए देश की रणनीतिक आवश्यकताओं पर विचार कर रहे हैं और व्यापार रियायतों के आदान-प्रदान से परे हैं।
- वे वैश्विक मूल्य श्रृंखला (जीवीसी) में भारत के लिए एक मजबूत स्थिति को सक्षम करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं और इसमें कई नए घटक शामिल हैं।

भारत की एफटीए यात्रा

- भारत की एफटीए यात्रा 1975 में बैंकॉक समझौते के साथ शुरू हुई थी लेकिन 1998 में पहली बार पर्याप्त टैरिफ लाइनों पर कर्तव्यों को समाप्त कर दिया गया था, जब भारत-श्रीलंका एफटीए पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- 'लुक ईस्ट पॉलिसी' के चलते भारत ने पूर्वी एशियाई देशों के साथ कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए।
- 2019 तक, यह तर्क दिया गया था कि भारत के एफटीए भारत के मुकाबले अपने व्यापारिक भागीदारों के लिए आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी थे क्योंकि ये एफटीए गैर-टैरिफ बाधाओं से निपटने में असमर्थ थे।
- भारत 16 देशों की क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) से बाहर हो गया
 - भारत ने दावा किया कि समूह का दायरा मूल अधिदेश से आगे बढ़ा दिया गया था। साथ ही इसमें भारतीय उद्योगों के लिए अपर्याप्त सुरक्षा उपाय थे।
- पोस्ट कोविड -19, भारत एफटीए पर आक्रामक रूप से जोर दे रहा है क्योंकि यह अपने बाजारों तक पहुंच के बदले में निवेश, प्रौद्योगिकी, आईपी और अपने माल और सेवाओं के लिए एक संभावित बाजार चाहता है।
 - इसके परिणामस्वरूप मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात और ऑस्ट्रेलिया के साथ त्वरित रूप से एफटीए पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

नए युग के मुक्त व्यापार समझौतों का महत्व

- भारत के इस साल के अंत तक दीवाली तक और कनाडा के साथ ब्रिटेन के समझौते को समाप्त करने की उम्मीद है।
- ये देश उन सभी कारकों की पेशकश करते हैं जिनकी भारत को वैश्विक और घरेलू दोनों बाजारों की सेवा करने वाली एक भरोसेमंद उत्पादन क्षमता स्थापित करने की आवश्यकता है।
 - इन एफटीए से रत्न और आभूषण, इंजीनियरिंग सामान, कृषि-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, कपड़ा, प्रौद्योगिकी और वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों को लाभ होने की संभावना है।
- **2030 तक 2 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) में भारत की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।**
 - आज, वैश्विक वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात का 70 प्रतिशत जीवीसी से आता है।
 - जीवीसी को घनिष्ठ व्यापार सहयोग, कम शुल्क और कुशल सीमा शुल्क प्रशासन की आवश्यकता होती है, जिसे एक एफटीए द्वारा सुनिश्चित किया जा सकता है।
- एफटीए में डिजिटल व्यापार जैसे नए युग के क्षेत्रों को शामिल करने से प्रवेश बाधाओं को कम करने, पारदर्शिता बढ़ाने और सहयोगी नेटवर्क को सुविधाजनक बनाने के द्वारा सहयोग को बढ़ाया जाएगा और जीवीसी को बदल दिया जाएगा।

सामरिक क्षेत्रों में भारत-ब्रिटेन सहयोग

● आर्थिक जुड़ाव

○ व्यापार

- यूके भारत के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों में से एक है और वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के व्यापार आंकड़ों के अनुसार, **2017-2018 में यूके के साथ भारत का व्यापार 14.497 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।**

○ निवेश

- मॉरीशस, सिंगापुर और जापान के बाद यूके भारत में चौथा सबसे बड़ा आवक निवेशक है।
- यूके का संचयी इक्विटी निवेश **\$26.09 बिलियन (अप्रैल 2000-जून 2018)** है, जो भारत में सभी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग 7% है।
- भारत यूके में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक न कर उभरा है। और ब्रिटेन में 110,000 से अधिक नौकरियों का सृजन करने वाली भारतीय कंपनियों के साथ दूसरे सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय रोजगार निर्माता के रूप में उभरा है।

● विज्ञान और तकनीक

- भारत-ब्रिटेन का संयुक्त निवेश **2008 में लगभग £1 मिलियन से बढ़ कर आज £200 मिलियन से भी अधिक हो गया है।**
- सौर ऊर्जा भंडारण पर ध्यान देने के साथ ही **भारत-यूके स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान एवं विकास केंद्र** द्वारा ऊर्जा कुशल निर्माण सामग्री हेतु एक संयुक्त अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम की घोषणा की गई है।
- **£13 मिलियन तक के संयुक्त निवेश के साथ ही रोगानुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) पर एक नए संयुक्त**

रणनीतिक समूह सहित £80 मिलियन की नई अनुसंधान साझेदारी भी स्थापित की गई है।

- **रक्षा**
 - 2015 में, दोनों देश सामरिक क्षेत्रों में क्षमता भागीदारी स्थापित करके अपने रक्षा संबंधों को बढ़ाने के लिए सहमत हुए।
 - रक्षा सहयोग पर चर्चा करने के लिए संस्थागत संवाद अर्थात रक्षा सलाहकार समूह की बैठक प्रतिवर्ष रक्षा सचिव स्तर पर आयोजित की जाती है।
 - **अजय योद्धा** (सेना-से-सेना द्विवार्षिक अभ्यास), **कौकण** (संयुक्त नौसेना-से-नौसेना वार्षिक अभ्यास) और **इंद्रधनुष** (संयुक्त हवा से हवा में अभ्यास) भारत और ब्रिटेन के बीच आयोजित होने वाले सैन्य अभ्यास हैं।

भारत-यूके एफटीए : व्यापक अवसर

- **क्षेत्रीय संतुलन**
 - ब्रिटेन हिंद-प्रशांत की ओर झुक रहा है, जहां भारत एक स्वाभाविक सहयोगी है।
 - भारत, जिसके पड़ोस में चीन के उदय से क्षेत्र का शक्ति संतुलन बदल गया है, ऐसे में क्षेत्रीय संतुलन की एक झलक बहाल करने के लिए जितना संभव हो उतना व्यापक गठबंधन की जरूरत है।
- **व्यापार, निवेश और नौकरियां**
 - 2019 में भारत-ब्रिटेन का व्यापार £23 बिलियन का था और दोनों देश 2030 तक इस आंकड़े को दोगुना करना चाहते हैं।
 - एक दूसरे की अर्थव्यवस्थाओं में निवेश के माध्यम से भारत और यूके में लगभग आधा मिलियन नौकरियों का सृजन किया जा सकता है।
- **ब्रिटिश माल के लिए बाजार**
 - भारत के साथ ब्रिटेन के बीच एक मुक्त व्यापार समझौता - दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, 1.4 अरब लोगों का देश, ऐसे में भारत विह्वस्की, कारों और सेवाओं जैसे ब्रिटिश सामानों के लिए एक बड़ा बाजार तैयार करेगा।
- **व्यवसायों के लिए लाभ**
 - भारत के साथ एक व्यापार समझौता बाधाओं को तोड़ देगा और ब्रिटिश व्यवसायों के लिए ब्रिटेन में अधिक निवेश, उच्च मजदूरी और कम कीमतों को सुरक्षित करना आसान बना देगा।
- **कुशल श्रम पहुंच**
 - ब्रिटेन के बाजारों तक पहुंचने वाले भारतीय कुशल श्रमिकों पर रियायतों की तलाश करेगा।
- **रक्षा ताकत:**
 - ब्रिटेन भारत के घरेलू रक्षा औद्योगिक आधार को मजबूत करने में भी योगदान दे सकता है।
 - दोनों पक्ष रसद सुविधाओं को साझा करके भारत की क्षेत्रीय पहुंच का विस्तार भी कर सकते हैं।

व्यापार सुगमता से आगे की राह

- नए युग के मुक्त व्यापार समझौते पारस्परिक आर्थिक लाभ और बढ़ी हुई व्यापार सुविधा पर आधारित हैं , भारत उन तरीकों का सहारा ले सकता है जो सुगम व्यापार की सुविधा प्रदान करेंगे।
 - भारत को स्वचालन के माध्यम से बंदरगाहों, शिपिंग, सीमा शुल्क आदि की दक्षता में सुधार करने की आवश्यकता है जो एमएसएमई द्वारा भागीदारी के लिए एक बड़ा बढ़ावा होगा।
 - आपूर्ति के वैकल्पिक स्रोतों का विकास करना जिसमें सभी घटक आसपास और स्थानीय रूप से उपलब्ध हों।
 - भारत को घरेलू खिलाड़ियों सहित सबसे कुशल आपूर्तिकर्ताओं से स्रोत के लिए एक हाइब्रिड मॉडल देखना चाहिए।
 - नए जमाने के एफटीए सेवाओं, ई-कॉमर्स, श्रम , जलवायु/पर्यावरण, डिजिटल व्यापार, सार्वजनिक खरीद, आपूर्ति श्रृंखला आदि में व्यापार के साथ अधिक समग्र और विविध व्यापार अवसरों की मांग करते हैं।

निष्कर्ष

- यूके और यूरोपीय संघ के साथ नए समझौतों में व्यापार सुविधा के अधिक आधुनिक तत्व हैं।
- भारत इन परिवर्तनों के बारे में अपनी समझ व्यक्त कर रहा है और आधुनिक आर्थिक व्यापार व्यवस्था को चलाने वाले तत्वों को अपना रहा है।
- इसलिए इन एफटीए की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगी कि इन एफटीए के निहितार्थ को सुविधाजनक बनाने के लिए घरेलू नियमों और विनियमों को किस तरह से बदला गया है।

स्रोत : [द हिंदू ब्लू](#)

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न -

Q. भारत के विदेश व्यापार और सहयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये।

1. भारत अपने निर्यात का 50% से अधिक उभरते और विकासशील देशों को निर्यात करता है।
2. भारत का पहला मुक्त व्यापार समझौता, बैंकाक समझौता 1975 में हस्ताक्षरित किया गया था।
3. भारत यूनाइटेड किंगडम में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा निवेशक है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये :

- a) केवल 1
- b) केवल 1 और 2
- c) केवल 2 और 3
- d) केवल 1, 2 और 3

उत्तर : (b)

- आयोग द्वारा मुक्त व्यापार समझौतों और उनकी लागत
 - भारत अब अपने निर्यात का 50% से अधिक उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को निर्यात करता है जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के हिस्से को पार कर जाता है।
- भारत का पहला मुक्त व्यापार समझौता, बैंकाक समझौते पर 1975 में हस्ताक्षर किए गए थे
- हालांकि, 1998 में पहली बार, जब भारत-श्रीलंका एफटीए पर हस्ताक्षर किए गए थे, पर्याप्त टैरिफ लाइनों पर कर्तव्यों को समाप्त कर दिया गया था।
- भारत यूके में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक है और ब्रिटेन में 110,000 से अधिक नौकरियों का सृजन करने वाली भारतीय कंपनियों के साथ दूसरे सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय रोजगार निर्माता के रूप में उभरा है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

Q. भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते में श्रम प्रधान क्षेत्रों में भारतीय निर्यात को एक बड़ा बल देने की क्षमता है। भारत अपने विकास और आर्थिक विकास के लिए विशेष रूप से कोविड -19 और ब्रेक्सिट के बाद एफटीए का लाभ कैसे उठा सकता है? टिप्पणी कीजिये।

